Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

बिहार के लोक संगीत के संरक्षण और प्रवर्धन में महिला गायक कलाकारों का योगदान

PRIYAM KUMARI
Research Scholar, Department of Performing and Fine Arts, Central University of Punjab Bathinda

DR. RISHPAL SINGH VIRK
Assistant Professor, Department of Performing and Fine Arts, Central University of Punjab Bathinda

सार: *बिहार प्रान्त की मुख्य भाषा भोजपुरी है| भोजपुरी भाषा में बिहार के लोक संगीत का अंश समाया हुआ है| व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीतों (सोहर ,नारकटाई, बधाई गीत, खेलौवना गीत संस्कार गीत, बरयिछा गीत, तिलक गीत, विवाह गीत, पीतर गीत, हल्दि गीत, चुमावन गीत नहावन गीत, नोहकाटाई गीत, गुराह्ती गीत, कन्यादान गीत, फेरागीत ,सींदुरदान गीत, भोजन गीत, विदाई गीत, डोमकछ गीत और मृत्यु के उपरान्त निर्गुण गीत) का समावेश है| बिहार प्रान्त के परम्परागत लोक संगीत का घेरा अत्यंत विशाल था लेकिन कालांतर में आ रहे परिवर्तनों के कारण लोक गीतों का मूल स्वरूप धुन्द्लाता नज़र आता है| बावजूद इसके बिहार की कुछ लोक संगीत महिला गायक कलाकारों ने लोक संगीत की पुरातनता को जीवित रखने में सराहनीय कार्य किये हैं| यह शोध पत्र उनके लोक संगीत के संरक्षण हेतु किये जा रहे प्रयासों पर आधारित है|*

कुंजी शब्द*: संस्कृति, भोजपुरी, लोक संगीत, महिला कलाकार, गीत|*

परिचय

लोक संगीत का अर्थ है लोगों का संगीत। सरल भाषा में कहें तो लोक संगीत एक सार्वभौमिक भाषा, कला और सौन्दर्य है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी मनोदशाओं में सामंजस्य बिठाता है और दर्शकों के मन का आसानी से मनोरंजन करता है, उसे हम लोक संगीत कहते हैं| देखा जाए तो प्रकृति के नो प्रकार के रसों को गा-बजा और नृत्य करके अपने मन के भावों को स्वाभाविक रूप से लोगों के सन्मुख व्यक्त करता है तो उसे लोक संगीत कहा जाता है।

लोक संगीत के बारे में संगीतकारों की राय है कि 'शास्त्रीय संगीत की उपज लोक संगीत से हुई है। कुछ विद्वान लोक संगीत को ग्रामीण संगीत समझते हैं, जबकि लोक संगीत उसे कहा जाता है जो रंजककारी तो है लेकिन किसी विशेष वर्ग तक सीमित नही है, यह प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक यह लोगों के रीति-रिवाजों, संस्कारों और स्वभाव में बदलाव के कारण परिवर्तनशील रहा है। इसका भावार्थ यह नहीं है कि लोक संगीत का कोई शास्त्र नहीं है, यह सरल और परिवर्तनशील है लेकिन अशास्त्री भी नहीं है। वस्तुतः लोक संगीत किसी भी सभ्यता एवं संस्कृति का स्तम्भ होता है जिसके तीन अंग (लोक गीत, लोक वाद्य एवं लोक नृत्य) उस सभ्यता एवं संस्कृति की मूल पहचान को दर्शाते हैं। यह लोकप्रिय रुचि के अनुसार कार्यात्मक और परिवर्तनशील रहता है। इस प्रकार का संगीत न केवल भारतीय परंपरा में बल्कि अन्य देशों की संगीत परंपराओं में भी मौजूद है। विभिन्न जातियों एवं परंपराओं का अपना-अपना संगीत होता है, लोक कला में परिवर्तन के साथ परिस्थितियाँ समानान्तर रहने पर भी लोक संगीत मौलिक एवं अनूठे संगीत का रूप ले लेता है। इस परिवर्तनशीलता के दौर में भी लोक संगीत के के मूल रूप को सुरक्षित रखने और इसका प्रचार प्रसार करने में लोक संगीत के कलाकारों की भूमिका सराहनीय रही है| भारत विभिन प्रान्तों का एक गुलदस्ता है प्रत्येक प्रांत की एक विशेष सुगंध है| इसी गुलदस्ते में से एक बिहार नामक प्रान्त है जिसका अपना विलक्षण लोक संगीत है, बिहार प्रान्त के लोक संगीत की विशेस्ताएं और लोक संगीत की महिला कलाकारों की इसके मूल रूप को सुरक्षित करने में निभाई गयी भूमिका का वर्णन ही इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य है|

बिहार वह स्थान है जहा भारत का इतिहास स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है, बिहार का लिक्ष्वी विश्व का सबसे प्राचीनतम गणतन्त्र था | भगवान् बुद्ध और महावीर ने यहीं से संसार को अंहिसा का सन्देश दिया| बिहार कला एवं संस्कृति के विकास का प्रमुख केंद्र रहा हैं| बिहार में आज भी पाषाणकालीन मानव संस्कृति के चिन्ह है | पश्चिमी भारत को मौर्य काल में बिहार ने कला और संस्कृति में एक नई दिशा दी| पाल शासन काल में चित्रकला और मूर्तिकला का जो विकास हुआ वह पूर्वी भारत में एक नई शैली लाया| पाटलिपुत्र प्राचीनकाल से

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र रहा है| बिहार की संस्कृति प्राचीन और महत्वपूर्ण है| राजा जनक की सभा मंडली ने भारतीय दर्शनशास्त्र में सर्वोच्चविचार की शुरुवात की जिससे भारत की महान संस्कृति भी समृद्ध हुई|

बिहार राज्य की स्थापना 22 मार्च 1912 को हुई| बिहार भारत देश का बारवां राज्य था| बिहार में 38 जिले है जो 9 प्रमंडलों में बटें हैं| लगभग 14 करोड़ जनसँख्या वाले इस राज्य की सीमा 94.163 वर्गकिलोमीटर है| इसके उत्तर में नेपाल दक्षिण में झारखण्ड पश्चिम में उत्तरप्रदेश और पूर्व में पश्चिमबंगाल है| बिहार के लोकसाहित्य का भी में भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रहा है| बिहार के लोकगीत संस्कृति से जुड़े हुए हैं जिनकी विभिन श्रेणी हैं| बिहार प्रान्त कुई मुख्य भाषा भोजपुरी है| भोजपुरी भाषा में बिहार के लोक संगीत का अंश समाया हुआ है| व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीतों (सोहर ,नारकटाई, बधाई गीत, खेलौवना गीत संस्कार गीत, बरयिछा गीत, तिलक गीत, विवाह गीत, पीतर गीत, हल्दि गीत, चुमावन गीत नहावन गीत, नोहकाटाई गीत, गुराहती गीत, कन्यादान गीत, फेरागीत ,सींदुरदान गीत, भोजन गीत, विदाई गीत, डोमकछ गीत और मृत्यु के उपरान्त निर्गुण गीत) का समावेश है| बिहार प्रान्त के परम्परागत लोक संगीत का घेरा अत्यंत विशाल था लेकिन कालांतर में आ रहे परिवर्तनों के कारण लोक गीतों का मूल स्वरूप धुन्द्लाता नज़र आता है| बावजूद इसके बिहार की कुछ लोक संगीत महिला गायक कलाकारों ने लोक संगीत की पुरातनता को जीवित रखने में सराहनीय कार्य किये हैं:

बिहार प्रान्त की प्रमुख महिला लोक संगीत कलाकार

विंध्यवासिनी देवी

विंध्यवासिनी देवी को 'बिहार कोकिला' भी कहा जाता है जिन्होंने न केवल बिहार के लोकगीतों को अपनी आवाज दी बल्कि उनका संकलन भी किया। आप का जन्म 5 मार्च 1920 को मुजफ्फरपुर में हुआ। उनके पिता का नाम जगत बहादुर था। जन्म के समय ही आपकी माता का देहांत हो गया और आपका लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा नानी के घर हुई। उनके नाना भजन गाते थे। विंध्यवासिनी देवी भी उनके साथ बैठकर भजन गातीं, यहीं से उनका मन संगीत में रम गया और 7 वर्ष की उम्र तक आते-आते वह लोकगीतों का गायन करने लगी थीं। नाना के प्रोत्साहन से गुरु क्षितीश चंद्र वर्मा से सानिध्य में उनकी संगीत में विधिवत शिक्षा आरंभ हुई। मात्र 11 वर्ष की आयु में सहदेश्वर चंद्र वर्मा से विंध्यवासिनी देवी का विवाह हुआ। श्री वर्मा पारसी थियेटर में संगीत निर्देशक थे संयोगवस ससुराल में भी उन्हें संगीत का वातावरण मिला। 1945 में विंध्यवासिनी देवी का पहला सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ। पटना आने के बाद उन्होंने हिन्दी विद्या पीठ, प्रयाग से विशारद और देवघर से साहित्य भूषण की उपाधि प्राप्त की और फिर पटना के आर्य कन्या विद्यालय में संगीत शिक्षिका के रूप में कार्य शुरू किया 1949 में लड़कियों की संगीत शिक्षा के लिए उन्होंने 'विंध्य कला मंदिर' नामक संस्थान की स्थापना की। इस संस्थान को वह अपना मानस पुत्री कहती थीं। 1948 में विंध्यवासिनी देवी द्वारा निर्मित संगीत रूपक 'मानव' को जबर्दस्त ख्याति मिली। बिहार सरकार की अनुशंसा पर उसे अनेक बार मंचित किया गया। उनके इसी संगीत रूपक की वजह से आकाशवाणी के तत्कालीन महानिदेशक जगदीश चंद माथुर का ध्यान विंध्यवासिनी देवी की ओर आकृष्ट हुआ और उन्होंने बिहार की इस कला प्रतिभा को आकाशवाणी के पटना केंद्र में लोकसंगीत संयोजिका के पद पर नियुक्त किया। 1979 तक वे इसी पद पर कार्यरत रहीं। मगही, मैथिली और भोजपुरी संगीत में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें 1974 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। उनकी कला सेवाओं और उपलब्धियों को देखते हुए 'संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली ने अपनी सदस्यता सौंपी। गणतंत्र दिवस के उत्सवों में भी उन्होंने कई बार सांस्कृतिक दल का प्रतिनिधित्व किया। विंध्यवासिनी देवी फिल्में में भी सफल रहीं। फिल्मों में उन्होंने अपनी शुरुआत मगही फिल्म 'भैया' से की, जिसमें संगीत निर्देशन चित्रगुप्त का था और गीत के बोल विंध्यवासिनी देवी के थे। उन्होंने मैथिली फिल्म कन्यादान के लिए संगीत निर्देशन और गीत लेखन का भी कार्य किया।फणीश्वरनाथ रेणू के उपन्यास 'मैला आंचल' पर बनने वाली फिल्म 'डागडर बाबू' के लिए आर.डी. बर्मन के निर्देशन में इन्होंने दो गीत लिखे थे। भूपेन हजारिका ने छठी मैया पर लिखे उनके दो लोकगीतों को अपनी आवाज दी थी।

श्यामा झा

श्यामा झा का जन्म 5 फरवरी 1968 को बिहार के सहरसा जिले में पिता अनिरुद्ध और माता सावित्री देवी के घर हुआ| आपकी प्रारम्भिक शिक्षा और स्नातक ,स्नातकोत्तर की पढाई सहरसा जिले से हुई| आपकी संगीत शिक्षा प्रयागराज संगीत समिति इलाहाबाद से हुई| बाल अवस्था में आप अपनी बड़ी बहन जो प्रयागराज संगीत समिति इलाहाबाद से संगीत की शिक्षा लेती थी, के साथ प्रयागराज संगीत समिति इलाहाबाद साथ जाया करती थी और बैठकर गुरुजन को सुना करती थी इसी से आपकी संगीत के प्रति रूचि जागी और तब से आपका रुझान संगीत कला की और अग्रसर हुआ| इसके बाद आप ने संगीत को विधिवत रूप में सीखा और एक कुशल गायक के रूप में अपने आप को स्थापित किया|

आप ने गायक के रूप में अनेक राज्यों में अपनी कला को प्रदर्शित किया है| बिहार सरकार द्वारा संचालित सांस्कृतिक कार्यक्रम, कला संस्कृति विभाग, पर्यटन विभाग, शिक्षा विभाग इत्यादि में अपनी भागीदारी दे चुकी हैं| आप की समाज कल्याण के कार्यों में विशेष रूचि है| आप ने शिक्षा विभाग की 'बाल किलकारी' परियोजना के अंतर्गत विशेष दिव्यांग बच्चों को संगीत की शिक्षा देती हैं| आप द्वारा अनेक रचनायों को अपनी कलम का सिंगार बनाया गया| आप संगीत विद्यार्थियों को बिहार के पारम्परिक गीत विधाओं के साथ-साथ अपनी रचनायों का गायन भी संगीत विद्यार्थियों को देती हैं|

संगीतक कला के क्षेत्र में दिए गये योगदान के लिए आपको अनेक मान सन्मान प्राप्त हुए जिनमें सिद्धेश्वरी देवी सम्मान (चार बार), गुलज़ार साहब सम्मान, पर्यावरण गीत के लिए बिहार सरकार से विशेष सम्मान आदि प्रमुख हैं|

बिहार के लोक संगीत में परिवर्तन के विषय पर इनका मत है कि कम समय में ज्यादा लोकप्रियता और ज्यादा लाभ दोअर्थिगानों को बढावा दे रहा है| सरकार को इसके प्रती कोई ठोस कानून बनने चाहिए जिससे लोक संगीत की मूल धरोहर सुरक्षित रह सके| (झा श. , 2024)

श्वेता सुमन

बिहार के लोक संगीत में श्वेता सुमन का नाम अति सन्मान से लिया जाता है[बिहार के लोक संगीत के प्रसार और प्रचार में श्वेता सुमन द्वारा दिया गया योगदान सराहनीय है| आप बचपन से ही संगीत की उपासक रही हैं| आप की प्रारम्भिक शिक्षा पटना के डॉन बास्को एकेडमी एवं हार्टमन गर्ल्स हाई स्कूल से हुई, उपरान्त आप ने पटना विश्वविद्यालय के मगध महिला कालेज से स्नातक एवं गढवा के शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय से B.ED की डिग्री करने के उपरांत चंडीगड़ और अलाहाबाद विश्वविद्यालय से संगीत एवं नृत्य में शिक्षा प्राप्त की| आप शास्त्रीय संगीत की कुशल गायक और नृतक हैं|

16 जनपदों में से एक जनपद है अंग प्रदेश, जिसे वर्तमान समय में भागलपुर के नाम से जाना जाता है, आप ने इसी अंग प्रदेश के लोक संगीत और संस्कृति को सुरक्षित रखने का संकल्प लिया और अपनी गायकी के माध्यम से समाज को जागरूक करने का प्रयास किया है और अभी भी प्रयासरत हैं| वर्तमान समय में विश्विक्रण के प्रभाव से कलाएं भी नही बच पायी फिर भी पाश्चात्य संगीत और आर्केस्टा के बीच ये अपनी पारम्परिक लोक संगीत के गायन व् नृत्य के माध्यम से बिहार के लोक संगीत को सुरक्षित करने का प्रयास कर रही हैं| आपका मानना है कि जिस तरह किसी भी भाषा को सीखने से पहले उसकी वर्णमाला का ज्ञान आवश्क है उसी तरह लोक संगीत की भी अपनी वर्णमाला होती है जिसे सीखना और जानना जरुरी है| आज की पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत सीखने के बाद अपने प्रान्त के लोक संगीत को पूर्ण रूप में समझने के बाद ही लोक गीतों का गायन या नृत्य का प्रदर्शन करना चाहिए|

आप ने लोक संगीत के प्रचार और पसार के लिए उलेखनीय कार्य किये हैं| आप हमेशा लोक संगीत में आ रहे परिवर्तनों से चिंतित नज़र आई| नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से विमुख होता देखआप ने 2013 में 'कृष्णा कल्याण कला केन्द्र' की स्थापना भागलपुर में की, जहाँ शास्त्रीय संगीय और लोक संगीत (गायन और नृत्य) की शिक्षा दी जाती है|

श्वेता सुमन प्रदर्शन दौरान अपने गायन और नृत्य में समाज के अंदर पनप रही व्याप्तकुरूतियों पर प्रहार करती हैं| आप के प्रदर्शन का मुख्य उदेश्य समाज से सटा होता है| आप समाजिक विषयों जैसे बेटी बचाओ के लिए जागरूकता, भ्रूणहत्या के विरुद्ध, एसिड अटैक के विरुद्ध और पर्यावरण को बचाने के लिए किये जाने वाले प्रयासों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करती हैं| बिहार के लोक संगीत के प्रचार पसार में आप ने अनेक सामाजिक सम्मेलनों, संगीत कार्यक्रमों, पटना दूरदर्शन ,आकाशवाणी जयपुर दूरदर्शन एवं कई राष्ट्रीय मंचों पर अंगप्रदेश और बिहार के लोक संगीत का प्रस्तुतिक्रण करके अपने प्रांत का गौरव बढ़ाया है इसी लिए आप बिहार प्रांत की उच्च श्रेणी के गायकों में अपना विशेष स्थान रखती हैं|

आप लोक संगीत के गायन पक्ष के साथ साथ नृत्य पक्ष की भी कुशल कलाकार हैं, यह विलक्षणता आप के व्यक्तित्व को और भी प्रभाशाली बनाती है| आप ने अनेक नृत्य नाटिकाओं का निर्देशन किया है जिनमे से गंगा नृत्य नाटिका, पर्यावरण संरक्षण ,बेटी बचाओ, भ्रूण हत्या , महिषासुरमर्दनी नृत्य संगीत, कत्थक ,कजरी, ठुमरी, दादरा लोक नृत्य आदि मुख्य हैं|

बिहार प्रान्त में कला संस्कृति के क्षेत्र में प्रचार प्रसार हेतु दिए गये योगदान के लिए आप को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसमें संगीत नाटक अकादमी पटना, संग्रहालय सम्मान, गांधी संग्रहालय सम्मान, राष्ट्रीय सेवा योजना सम्मान, कला संगम सम्मान, कला संस्कृति एवं युवा विभाग सम्मान, नेहरु बाल संगम सम्मान, हेल्प इज इंडिया यूनिसेफ सम्मान, स्थानीय प्रशाशन द्वारा बेटी बचाओ एवं महिला सशक्तिकरण के लिए दैनिक जागरण सम्मान, नेशनल ह्यूमन राइट्स काउंसिल और नेशनल होम्योपैथी की कॉन्फ्रेंस में उत्कृष्ट संचालन के लिए विशेष सम्मान, लायंस क्लब द्वारा महिला सशक्तिकरण सम्मान, राष्ट्रीय अटल सम्मान, भारत सरकार के आयकर विभाग द्वारा विशेष सम्मान आदि प्रमुख हैं| इसके इलावा आपको नृत्य प्रशिक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए दैनिक जागरण के मंच पर डॉ कुमार विश्वास द्वारा सम्मानित किया गया|

भोजपुरी संगीत में परिवर्तनशीलता के कारण के प्रश्न पर श्वेता सुमन कहती हैं कि आजकल के कलाकारों का अपनी संस्कृत को ना जानना और सस्ती लोकप्रियता के कारण भोजपुरी समाज और संस्कृति को फुहर बना रहे है| वर्तमान समय के लोक पूजा पाठ और विवाह इत्यादि अवसरों में परम्परागत संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं परन्तु फिर बिहार के लोक संगीत को परिवर्तनशीलता से क्यों नही बचा पार रहे हैं| इसका कारण सस्ती लोकप्रियता है जिसके कारण हम अपनी संस्कृति को क्यों प्रदूषित कर रहे है| सरकार को भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए प्रयास करने चाहिए जिससे प्रत्येक राज्य की कलाएं सुरक्षित हो पाएंगी| (सुमन, 2024)

रंजन झा

बिहार के लोकसंगीत में भोजपुरी लोक गीतों की प्रसिद्ध गायिका रंजना झा का जन्म 25 नवंबर 1977 को अररिया जिला के देवीगंज गाँव में हुआ| आपकी प्रारंभिक शिक्षा अपने जिले से प्राप्त करने के उपरान्त आपने पटना से संगीत विषय में स्नातकोत्तर और पीएचडी की उपाधियाँ हासिल की है| आप ने अकादमिक शिक्षा के साथ साथ संगीत की विधिवत तालीम भी ग्रहण की| संगीतक तालीम में आप के पहले गुरु आपके पिता भागवत मिश्र वियोगी और माता शांति मिश्रा रही, उसके बाद आपने योगेन्द्र भारती ,राजन सेजुवार, ओमप्रकाश नारायण, विदुषी किशोरी आमोंकर से संगीत की विधिवत तालीम ग्रहन की| आप की संगीतक तालीम दर्शाती है कि आप लोक संगीत के साथ-साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की भी कुशल कलाकार हैं| लोक संगीत में आप की केवल भोजपुरी ही नही बल्कि मगही, मैथली व् अन्य भाषाओं पर भी समान पकड़ हैं|

आप का नाम बिहार के लोक संगीत में अति सन्मान से लिया जाता है| एक गायक के रूप में आपका बिहार के लोक संगीत को विलक्षण योगदान रहा है| आप ने अपने गायन द्वारा बिहार के लोक संगीत के मूल के संरक्षण के लिए उलेखनीय कार्य किये हैं| आप के गायन में अपने प्रान्त के लोक संगीत की परम्परागत खुशबू है इसीलिए आप बिहार के लोगों में अतियंत लोकप्रिय हैं| आप लंबे समय से आकाशवाणी की 'ए ग्रेड' प्रमाणित कलाकार हैं।

आप के द्वारा विभिन्न संगीतक म्यूजिक एल्बम रिकार्ड हुई जिसमें मैथिली (चानन, विवाह गीत, असगर प्रीत, किये रहीछी दूर-दूर, मिथिला पारंपरिक लोकगीत); प्रीतम (सद्गुरु तुमको प्रणाम, मैया दया करो, साईं तू ही तू है ,कोशिश, हमसफर ,तेरे मयखाने में ,फिर तुम चले गए ,तेरा शुक्रिया ,नाचे नंदलाल); पार्शव संगीत (एक चुटकी सिंदूर ,मैथिली, (लोटस ब्लूम मैथिली) गंगा माई जैसन भौजी हमार ,लाल, दहेज दानव ,भैया बहन के प्यार; टीवी सीरियल (सिया के राम-स्टार प्लस हिंदी); नैन नाही तड़पत बेल, (मैथिली डी.डी बिहार) आदि प्रमुख हैं| आप के बिहार प्रान्त में लोक संगीत, कला और संस्कृति के क्षेत्र में दिए गये योगदान हेतु आप को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसमें पद्मश्री विंध्यवासिनी देवी युवा कला पुरस्कार, लिच्छवी सम्मान, संगीत श्री, मिथिला विभूति, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और ताम्र पात्र आदि विशेष रूप में वर्णनयोग्य हैं| (झा र. , 2024)

सोनी पांडे

सोनी पांडे का जन्म उड़ीसा नुआपटना में 11 अक्टूबर 1980 को हुआ| आप की प्रारम्भिक शिक्षा बालनिकेतन से आरंभ हो कर संगीत और सोसियोलोजी विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री तिलक मांझी विश्वविद्यालय से सम्पूर्ण हुई| सोनी पांडे के परदादा को 'सितारे हिंद' का खिताब बनारस में मिला था| आपको बचपन से ही संगीत से प्रेम था| आपके पहले संगीत गुरु आपके पिता श्री कैलाश नाथ बाजपेयी और माता श्रीमती पुष्पा बाजपेई इसके उपरांत आपने मोहन मिशा से संगीत की शिक्षा ली|

आप वर्तमान समय में बिहार प्रांत के युवा लोक संगीत गायकों की श्रेणी में आती हैं| आप ने बिहार सरकार के द्वारा संचालित अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर बिहार के लोकसंगीत की प्रम्प्रग्त्ता को गाकर अपना अमूल्य योगदान दिया है|

भोजपुरी संगीत में परिवर्तनशीलता का कारण आप ओछी मानसिकता और गीतों में बढती फूहरता मानते हैं| वर्तमान युग के कलाकार गाने के इलावा दिखाने में ज्यादा प्रयासरत हैं| ऐसी मानसिकता का प्रस्तुतिकरण बिहार प्रांत के लोक संगीत के लिए दुश्प्रनामी हो सकता है| आपका विचार है कि बिहार सरकार को संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से इस विषय पर कुछ गंभीर कदम उठाने चाहिए ताकि बिहार की इस विलुप्त होती संस्कृति को बचाया जा सके| (पांडे स. , 2024)

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पस्ट है कि बिहार के लोक संगीत के संरक्षण में जहाँ पुरुष कलाकारों का उलेखनीय योगदान है वहीँ महिला कलाकारों का योगदान भी विलक्षण है| यह महिला कलाकार पिछले कई दशकों से लोक संगीत के प्रचार प्रसार में कार्यशील हैं| इन कलाकारों ने परम्परागत लोक संगीत के साथ साथ समाज में पनप रही कुरूतियों से लोगों को जागरूक करने हेतु भी गाया जो लोगों में अति मकबूल हुआ| बहु-गिनती महिला कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत की विधिवत तालीम ग्रहन करने के बाद लोक संगीत के क्षेत्र में उलेखनीय कार्य किये हैं| महिला कलाकार का एक गायक के रूप लोगों में प्रदर्शित होना अपने आप में एक कठिन कार्य है लेकिन उपरोक्त कलाकारों ने जहाँ लोक संगीत के प्रचार पसार में एक गायक के रूप में कार्य किया वहीँ कई शिक्षण संसथान बनाये जहाँ संगीत की विधिवत तालीम शुरू हुई और इन संस्थानों से संगीत की तालीम लेने के बाद अनेक युवा कलाकार लोक संगीत के क्षेत्र में आये जो बिहार प्रांत के लोक संगीत को निरंतर विकसित कर रहे हैं|

साक्षात्कार

रंजन झा, बिहार, 2024, अप्रैल रविवार.
श्यामा झा, बिहार, 2024, अप्रैल, सोमवार
सोनी पांडे, अिहार, 2024 , अप्रैल, मंगलवार
श्वेता, बिहार, 2024, मार्च रविवार